सूरह — एक कहानी

सूरह अश-शरह

कुशादगी

पूरा सफ़र — मुश्किल के साथ आसानी, दो बार —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 94 • 8 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अलम नश्रह् लक सद्रक
1. क्या हमने आपका सीना कुशादा नहीं कर दिया?

व वज़'अना 'अन्क विज़्रक
2. और आपसे आपका बोझ उतार दिया।

व रफ़'अना लक ज़िक्रक
4. और आपका ज़िक्र बुलंद कर दिया।

फ़-इन्न म'अल्-'उस्रि युस्रा
5. तो बेशक मुश्किल के साथ आसानी है।

फ़-इज़ा फ़रग़्त फ़न्सब
7. तो जब आप फ़ारिग़ हों तो मेहनत कीजिए।

व इला रब्बिक फ़र्ग़ब
8. और अपने रब ही की तरफ़ रग़बत कीजिए।

अद-दुहा की साथी सूरह

बेटा, यह सूरह अपनी पिछली सूरह की जोड़ी है। अद-दुहा इस बात पर ख़त्म हुई थी कि अल्लाह ने नबी ﷺ के लिए क्या किया और अब उन्हें दूसरों के लिए क्या करना है। अश-शरह उसी गुफ़्तगू को जारी रखती है — वही शफ़क़त, वही सवाल पूछने का अंदाज़, वही आवाज़।

और इसका आग़ाज़ एक ऐसे सवाल से होता है जो दरअसल एक तोहफ़ा है: 'अलम नश्रह् लक सद्रक — क्या हमने आपके लिए आपका सीना कुशादा नहीं कर दिया?'

'शरह अस-सद्र', बेटा — सीने का खुलना, फैलना, कुशादा हो जाना। इसके दो दर्जे हैं, और यहाँ दोनों सही हैं। जिस्मानी तौर पर: अहादीस बयान करती हैं कि आपका सीना मुबारक खोला गया, आपका दिल धो कर हिकमत और ईमान से भर दिया गया — एक बार बचपन में बनू साद में, और दोबारा इसरा की रात।

और रूहानी तौर पर — और यही वो दर्जा है जो हमसे भी ताल्लुक़ रखता है, बेटा — शरह अस-सद्र का मतलब है वो सीना जिसमें गुंजाइश हो। मुश्किल की गुंजाइश, बग़ैर टूटे हुए। लोगों की बद-तमीज़ी की गुंजाइश, बग़ैर फटे हुए। हक़ की, सब्र की, रहमत की, उम्मीद की गुंजाइश।

बेटा, इसके उलट हालत के बारे में सोचिए — एक तंग सीना। हर चीज़ चुभती है, छोटे मसले पहाड़ लगते हैं, एक बे-परवाह जुमला पूरा दिन बर्बाद कर देता है। यह 'दैक़ अस-सद्र' है, तंगी। और अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ को उनके सबसे सख़्त सालों के दरमियान याद दिलाया: मैंने तुम्हारा सीना कुशादा कर दिया है। तुम्हें गुंजाइश अता की गई है।

और यह वो तोहफ़ा है जो आप भी माँग सकते हैं। जब आप दब जाएँ, तो सिर्फ़ यह मत माँगिए कि अल्लाह मसला हटा दें — यह भी माँगिए कि वो आपका सीना कुशादा कर दें, जैसा मूसा (अलैहि0) ने दुआ की: 'रब्बिश्-रह् ली सद्री।' कभी कभी वो बोझ छोटा करने के बजाय बर्तन बड़ा कर देते हैं।

बोझ उतर गया, नाम बुलंद हो गया

'व वज़'अना 'अन्क विज़्रक — और हमने आपसे आपका बोझ उतार दिया — अल्लज़ी अन्क़ज़ ज़हृक — जिसने आपकी पीठ तोड़ रखी थी।'

बेटा, लफ़्ज़ 'अन्क़ज़' उस वज़न का बयान है जो इतना भारी हो कि चटख़ने की आवाज़ निकलने लगे — जैसे पीठ टूटने वाली हो। उलमा इस बोझ की तफ़्सीर मिशन के इब्तिदाई सालों के वज़न और अपनी क़ौम की हालत पर होने वाली तकलीफ़ से करते हैं — और अल्लाह ने उसे हल्का कर दिया, उतार दिया, उनकी पीठ से हटा दिया।

और फिर: 'व रफ़'अना लक ज़िक्रक — और हमने आपके लिए आपका ज़िक्र बुलंद कर दिया।'

बेटा, इस आयत पर थोड़ा ठहरिए, क्योंकि यह उस वक़्त नाज़िल हुई जब मक्का की गलियों में उनका नाम घसीटा जा रहा था। उन्हें मजनून कहा जाता था, शायर, जादूगर।

बच्चों को उन्हें पत्थर मारने के लिए भेजा जाता था। उनका नाम उनके अपने शहर में एक गाली बन चुका था।

और अल्लाह ने फ़रमाया: हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलंद कर दिया।

अब देखिए क्या हुआ, बेटा। चौदह सौ साल बाद, ज़मीन के हर कोने में, दिन में पाँच बार, लाखों मीनारों से: 'अश्हदु अन्न मुहम्मदर्-रसूलुल्लाह।' चौबीस घंटों में एक लम्हा भी ऐसा नहीं जब इस ज़मीन पर कहीं न कहीं उनका नाम पुकारा न जा रहा हो — जैसे जैसे सूरज चलता है और नमाज़ के औक़ात उसके साथ दुनिया भर में चलते हैं।

और इससे भी बढ़ कर: अल्लाह ने उनका नाम अपने नाम के साथ मिला दिया। कलमे में, अज़ान में, हर नमाज़ के तशह्हुद में। क़तादा (रह0) ने इस आयत के बारे में कहा: अल्लाह ने उनका ज़िक्र दुनिया में भी बुलंद किया और आख़िरत में भी — कोई बोलने वाला, कोई गवाही देने वाला, कोई नमाज़ पढ़ने वाला ऐसा नहीं जो यह न कहता हो: ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह।

बेटा, जब किसी शख़्स को हक़ीर समझा जाए और रद्द कर दिया जाए मगर वो अल्लाह के साथ सच्चा रहे — तो देखिए अल्लाह उस शख़्स के नाम के साथ क्या कर सकते हैं।

मुश्किल के साथ — आसानी। दो बार।

और अब, बेटा, वो दो आयतें जिनके लिए यह सूरह मशहूर है, और जिन्होंने लाखों मोमिनीन को उनकी ज़िंदगी के सबसे अँधेरे लम्हों से पार उतारा है:

'फ़-इन्न म'अल्-'उस्रि युस्रा — तो बेशक, मुश्किल के साथ आसानी है। इन्न म'अल्-'उस्रि युस्रा — बेशक, मुश्किल के साथ आसानी है।'

बेटा, इन आयतों की तीन बातें ग़ौर से देखिए, क्योंकि हर एक ख़ज़ाना है।

पहली — लफ़्ज़ 'म'अ' है, 'ब'द' नहीं। अल्लाह यह नहीं कहते कि 'मुश्किल के बाद आसानी है'; वो कहते हैं 'मुश्किल के साथ आसानी'। आसानी किसी दूर के मुस्तक़बिल में इंतिज़ार नहीं कर रही — वो मुश्किल के साथ साथ सफ़र कर रही है, उसी के अंदर बँधी हुई। बेटा, अपनी गुज़री हुई मुश्किलात के बारे में सोचिए: वो बीमारी जिसने पूरे

ख़ानदान को जोड़ दिया; वो नाकामी जिसने आपकी ज़िंदगी का रुख़ बदल दिया; वो नुक़सान जिसने आपको इस तरह दुआ करना सिखाया जैसे पहले कभी नहीं किया था। आसानी मुश्किल के अंदर थी, उसके बाद नहीं।

दूसरी — तिकरार। दो बार क्यों कहा गया? क्योंकि अरबी में जब कोई मारिफ़ा (definite) लफ़्ज़ दोहराया जाए तो वो उसी एक चीज़ की तरफ़ लौटता है — 'अल-'उस्र', वो मुश्किल, एक ही है। मगर जब नकिरा (indefinite) लफ़्ज़ दोहराया जाए तो वो एक नई चीज़ की तरफ़ इशारा करता है — 'युस्रन', एक आसानी, और एक और आसानी। तो उलमा ने इसी से निकाला, और यह इब्ने अब्बास और इब्ने मसऊद (रज़ि0) से मशहूर मनक़ूल है: एक मुश्किल दो आसानियों पर कभी ग़ालिब नहीं आएगी।

बेटा, इसे याद कर लीजिए: एक मुश्किल, दो आसानियाँ। आपका मसला अकेला आता है; आसानी जोड़े में आती है।

तीसरी — सूरह में तरतीब। देखिए इससे ठीक पहले क्या आया: मैंने तुम्हारा सीना कुशादा किया, मैंने तुम्हारा बोझ उतारा, मैंने तुम्हारा ज़िक्र बुलंद किया। और फिर: मुश्किल के साथ आसानी है। अल्लाह ने पहले तीन मिसालें दीं उन मुश्किलात की जो वो ख़ुद नबी ﷺ की ज़िंदगी में हल कर चुके थे — और उसके बाद आम क़ानून बयान फ़रमाया। बेटा, ईमान इसी तरह बनता है: किसी मावरा-ए-हयात नारे से नहीं, बल्कि यह याद करने से कि वो पहले क्या क्या कर चुके हैं।

तो जब अगली मुश्किल आए — और आएगी — तो इन दो आयतों को थाम लीजिए। दीवार पर सजाने के लिए नहीं, बल्कि एक हक़ीक़त के तौर पर: आसानी पहले से इसी के अंदर है, और वो दो हैं।

जब फ़ारिग़ हों — तो दोबारा शुरू कीजिए

और सूरह दो मुख़्तसर हुक्मों पर ख़त्म होती है जो मिल कर मोमिन की ज़िंदगी का मुकम्मल फ़लसफ़ा बन जाते हैं: 'फ़-इज़ा फ़रग़्त फ़न्सब — तो जब आप फ़ारिग़ हो जाएँ, तो खड़े हो जाइए (इबादत में मेहनत कीजिए) — व इला रब्बिक फ़र्ग़ब — और

अपने रब ही की तरफ़ अपनी रग़बत मोड़िए।'

बेटा, 'फ़रग़त' — जब आप ख़ाली हों, जब एक काम मुकम्मल हो जाए। और हुक्म यह नहीं है कि 'फिर आराम करो'। हुक्म है 'फ़न्सब' — फिर मेहनत कीजिए, फिर इबादत में ज़ोर लगाइए।

उलमा ने इसकी कई तशरीहात कीं, और सब ख़ूबसूरत हैं: जब दुनिया के काम से फ़ारिग़ हों, तो नमाज़ की तरफ़ मुड़िए; जब एक इबादत ख़त्म हो, तो अगली की तरफ़ बढ़िए; जब फ़र्ज़ पूरे हों, तो नवाफ़िल के लिए खड़े हो जाइए; जब नमाज़ ख़त्म हो, तो दुआ के लिए हाथ उठाइए।

बेटा, उसूल समझिए: मोमिन की ज़िंदगी में कोई रिटायरमेंट नहीं। ऐसा कोई नुक़्ता नहीं जहाँ आप कहें 'अब काफ़ी दीन हो गया।' हर इख़्तिताम अगली इब्तिदा का दरवाज़ा है। काम का दिन ख़त्म? तो नमाज़। नमाज़ ख़त्म? तो ज़िक्र। रमज़ान ख़त्म? तो शव्वाल के छह। हज ख़त्म? तो एक बदली हुई ज़िंदगी।

और यह थका देने वाली बात नहीं, बेटा — इसके बिल्कुल उलट है। यही चीज़ इंसान को उस ख़ालीपन से बचाती है जो हर मुकम्मल हुए मक़सद के बाद आता है। जो लोग अपनी ख़ुशी को चीज़ें ख़त्म करने से बाँध लेते हैं, वो थोड़ी देर ख़ुश होते हैं और फिर दोबारा भटक जाते हैं। मोमिन एक ताल्लुक़ से दूसरे ताल्लुक़ की तरफ़ बढ़ता रहता है।

'व इला रब्बिक फ़र्ग़ब — और अपने रब ही की तरफ़ अपनी रग़बत मोड़िए।' 'रग़बह', बेटा, ख़्वाहिश है, तड़प है, किसी चीज़ को शिद्दत से चाहना। और अल्लाह फ़रमाते हैं: उस चाहत का रुख़ मेरी तरफ़ कर दो।

बेटा, आप ज़िंदगी भर चीज़ें चाहेंगे — आप इसी तरह बने हैं। यह आयत आपसे चाहना छोड़ने को नहीं कहती। यह आपको बताती है कि उस चाहत का निशाना कहाँ रखना है। उनसे छोटी चीज़ें भी माँगिए और बड़ी भी, दुनयवी भी और हमेशगी वाली भी। आपके दिल की सबसे गहरी 'काश' उस ज़ात की तरफ़ मुड़ी रहे जो हर उस चीज़ के मालिक हैं जो आप चाह सकते हैं।

और देखिए ये दोनों सूरहें कैसे ख़त्म होती हैं, बेटा — अद-दुहा और अश-शरह साथ रख कर। एक इस पर ख़त्म हुई: अपने रब की नेमत का चर्चा कीजिए। यह इस पर ख़त्म होती है: और अपने रब ही की तरफ़ अपनी रग़बत मोड़िए। जो मिल चुका उसका शुक्र, और जो अभी आना है उसकी तड़प — यही मोमिन के दिल की मुकम्मल हालत है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. शरह अस-सद्र माँगिए — कभी अल्लाह बोझ छोटा करने के बजाय बर्तन बड़ा कर देते हैं।

2. वो ऐसे बोझ उतार देते हैं जिनसे पीठ चटख़ने लगती है — आपका उठाया हुआ कोई वज़न उनकी नज़र से बाहर नहीं।

3. जब सच्चाई पर क़ायम रहने की वजह से आपको हक़ीर समझा जाए, तो याद कीजिए कि अल्लाह ने उस नाम के साथ क्या किया जो कभी मक्का में गाली था।

4. आसानी मुश्किल के साथ है, उसके बाद नहीं — उसे मुश्किल के अंदर तलाश कीजिए।

5. एक मुश्किल दो आसानियों पर कभी ग़ालिब नहीं आती — मुश्किल अकेली, आसानी जोड़े में।

6. मोमिन कभी रिटायर नहीं होता: हर आख़िरी लकीर अगली इबादत की शुरुआत है।

7. आप हमेशा किसी न किसी चीज़ के लिए तड़पेंगे — उस तड़प का रुख़ अपने रब की तरफ़ रखिए।

रब्बिश्-रह् ली सद्री — या अल्लाह, हमारे सीने कुशादा फ़रमाइए, हमारी पीठ हल्की कर दीजिए, और हमारी सारी तड़प अपने लिए कर लीजिए। आमीन।